Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 GISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

सौन्दर्यसप्तशती में नारी सौन्दर्य

खुशबू ठाकुर
शोध–छात्रा,
महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)
भारत।

Article Info

Volume 3 Issue 5

Page Number: 46-54

Publication Issue :

September-October-2020

Article History

Accepted : 20 Sep 2020

Published : 30 Sep 2020

सारांश – कवि ने नारी के सौन्दर्य का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन किया है। सौन्दर्यसप्तशती में नारी के सौन्दर्य को बताने के लिए नायिका शब्द का प्रयोग किया गया है इसमें नारी के प्रत्येक सौन्दर्य को दर्शाया गया है। जब नारी का मुख घूँघट से ढंका रहता है तो उसका सौन्दर्य और अधिक रहता है इस प्रकार से नव विवाहिता के सौन्दर्य को दर्शाया है, इसी क्रम में नायिका के सौन्दर्य को देखकर नायक रीझता है इसका वर्णन भी कवि ने किया हैं। जो चमत्कारपूर्ण है नारी के सौन्दर्य में जितने भी तत्त्व सम्मिलित हो सकते है उन सभी का समावेश करते हुए डॉ. द्विवेदी जी ने नारी के समस्त सौन्दर्य को स्थापित किया है। द्विवेदी जी का नारी सौन्दर्य इतना पूर्ण व प्रभावशाली होता है कि वह पाठक व सहृदय को गहराई तक प्रभावित करता है और आनंद प्राप्त कराता है। सौन्दर्य आनन्द का एक ऐसा शाश्वत स्रोत है जो अजस्र, निर्बाध गति से स्रवित होता रहता है।

मुख्य शब्द – सौन्दर्यसप्तशती, नारी, सौन्दर्य, नायिका, वेद, साहित्य,पाठक, आनन्द, नायक।

सुन्दरस्य भावः सौन्दर्यम् सुन्दर्, यत्र अर्थात् सुन्दरता का भाव ही सौन्दर्य है अथवा सुष्टु उनत्ति आर्दी करोति चित्तमिति जो चित्त को आर्द्र बना देता है वही सौन्दर्य है। सौन्दर्य अति प्राचीन शब्द है ऋग्वेद में उषस् के सूक्त सर्वाधिक सौन्दर्य से मण्डित है। ऋग्वेद में सौन्दर्य के अनेक पर्याय भी मिलते है– पेशल, श्री, श्रियः, भद्र, चारू, प्रिय, रूप, कल्याण शुभ, चित्र, अद्भुत आदि शब्दों के अर्थों पर विचार करने से भारत के सौन्दर्य विषयक ज्ञान का प्रशस्त परिचय मिलता है।

वेदों के पश्चात् उपनिषदों में भी सौन्दर्य को पर्याप्त स्थान मिला। उपनिषदों में सत्यं, शिवं तथा सुन्दरम् तीनों को समान रूप से अभिव्यक्ति मिली है। भारतीय विचारकों, चिन्तकों, ऋषियों, मनीषियों ने सौन्दर्य पर गहराई

Copyright : © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

से चिंतन किया। मन्त्रदृष्टा ऋषियों ने प्रकृति के प्रत्येक रूप में विश्व के प्रत्येक अणु में सौन्दर्य का दर्शन किया। इस परम्परा को अक्षुण्ण रखते हुए परवर्ती कवियों वाल्मीकि, व्यास, भास, कालिदास आदि ने अपनी रचनाओं में सर्वत्र सौन्दर्य का रस प्रवाहित किया जिनका क्रमिक रू‍प हम पुराणों, स्मृतियों, महाकाव्यों और अन्य साहित्य में स्पष्ट रूप से देखते है। वैदिक से लौकिक संस्कृत की ओर बढते हुए अनेक परिवर्तन और परिवर्धन हुयें, किन्तु सौन्दर्य वर्णन की उस श्रृंखला के दो रूप विकसित होने लगे–एक तो साहित्य में सौन्दर्य का चित्रण हो जाना, दूसरा सौन्दर्य वर्णन के लिए साहित्य–सर्जन करना। यह साहित्य सर्जन परम्परा हिन्दी साहित्य में पहुंची और हिन्दी साहित्य के कवियों ने सौन्दर्य को नया रूप प्रदान किया।

हिन्दी साहित्य के देदीप्यमान कवि बिहारी की एकमात्र रचना बिहारी सतसई है जो 700 पद्यों में निबद्ध है। यह श्रृंगार परक ग्रन्थ है। श्रंगारात्मक भाग में रूपांग सौन्दर्य, सौन्दर्योपकरण, नायक–नायिका भेद तथा हाव, भाव विलास का कथन किया गया है। नायक–नायिका निरूपण भी मुख्यतः तीन रूपों में मिलता है– प्रथम रूप में नायक कृष्ण और नायिका राधा है। इनका चित्रण करते हुए धार्मिक और दार्शनिक विचार को ध्यान में रखा गया है। द्वितीय रूप में राधा और कृष्ण का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया गया। किन्तु उनके आभास की प्रदीप्ति दी गई है। तृतीय रूप में लोकसंभव नायक–नायिका का स्पष्ट चित्र हैं। इसका सरस, भावपूर्ण संस्कृत पद्यानुवाद डॉ. प्रेमनारायण द्विवेदी जी ने किया।

कवि ने श्रृंगार रस का वर्णन अत्यन्त मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है। साहित्य शास्त्र के नौ रसों में इसे रसराज की उपाधि से विभूषित किया गया है। इसका कारण यह है कि केवल श्रृंगार रस के अन्तर्गत ही अधिकांश मनोभावों का वर्णन हो पाता है। श्रृंगार शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। श्रृ और आर जिसमें श्रृ का अर्थ है– कामोद्रेक अर्थात् काम फूट पडना और आर का अर्थ है– लाने वाला अर्थात् जो कामोद्रेक लाता है या पैदा करता है वह श्रृंगार कहलाता है।[1]

श्रृंगार रस को मर्मज्ञ कवियों ने अपनी कृति में सम्पूर्ण विश्व को रसमय करने में सक्षम और सशक्त बताया है। इस रस में पूर्णतः प्रेम और सौन्दर्य की प्रधानता रहती है तथा ऐसी दृष्टि में मानव मात्र का श्रृंगार रस की ओर आकर्षित होना स्वाभाविक ही है। रसराज श्रृंगार के दो भेद माने गये है– संयोग या सम्भोग श्रृंगार तथा वियोग श्रृंगार या विप्रलम्भ श्रृंगार।[2]

कवि ने श्रृंगार के जो दो रूपों का वर्णन किया है उनमें से नायक–नायिका के रूप सौन्दर्य का वर्णन अत्यधिक आश्चर्यजनक है तथा बिहारी ने इन दोहों में नायिका का स्वतंत्र नख–शिख वर्णन करते हुए सुन्दर चित्र प्रस्तुत किये है। उदाहरण दृष्टव्य है–

अनूदित पद्य–

गर्भभारेण खिन्नाया दृष्टिर्धनिमीलिता।
सुरतानन्दसम्भोगाच्छान्तदेहेव दृश्यते।।[3]

मूल पद्य–

अंग अंग छबि की लपट उपटति जाति अछेह।
खरी पातरीउ, तउ लगै भरी सी देह।।[4]

इस पद्य के अन्तर्गत नायिका की देह के आलम्बन रूप को प्रस्तुत किया गया है, परन्तु लगै भरी सी देह से यह स्पष्ट हो जाता है कि द्रष्टा के औत्सुकयमिश्रित हर्ष की व्यंजना भी हो रही है। लगै भरी सी देह में देह आलम्बन न होकर उद्दीपन है क्योकिं नायिका की तरह नायक का आकर्षण उसकी देह का भरी हुई सी लगना है तथा नायिका स्वयं ही यहां पर आलम्बन बनी हुई है । जिससे नायक उसकी तरफ आकर्षित हो रहा है।

नारी सौन्दर्य के वर्णन में दूसरे वे दोहे है जिनमें नायिका की कोई अंतरंग सखी या दूती रतिभव को पुष्ट करने के लिए नायिका के शारीरिक सौन्दर्य का वर्णन करती है जिससे नायक–नायिका की ओर आकर्षित आकृष्ट होता है।

अनूदित पद्य–

नीलाम्बराच्छादितमाननं यत्
सुशोभतेऽस्या नितरां मुरारे।
मन्ये प्रसन्ने यमुनासुनीरे
पूर्णः सुधांशुः प्रतिबिम्बितोऽस्ति।।[5]

मूल पद्य–

छिप्यौ छबीलौ मुँहु लसै नीलैं अंचर चीर।

मनौ कलानिधि झलमलै कालिदी कैं नीर।।[6]

नायिका की अंतरंग सखी नायक से उसके मुख की प्रशंसा करती हुई कहती है कि वह नीले रंग की साडी में से उसका मुँह ऐसे प्रतीत हो रहा है जैसे यमुना के नीर में चन्द्रमा झिलमिला रहा हो। कवि ने नायिका के रूप सौन्दर्य का वर्णन प्रस्तुत किया है। जिसमें नायिका के अंगों के सौन्दर्य की मार्मिक अनुकृति दिखलाई पडती है। निम्नांकित पद्य दृश्टव्य है–

अनूदित पद्य–

इयं विलीनेव सुचन्द्रिकायां
न दृश्यतेऽस्याः सखि किञ्चिदङ्गम्।

सुगन्धसूत्रग्रथिता अथापि
गच्छन्ति सख्यो मधुपाश्च सार्धम्।।[7]

मूल पद्य–

जुवति जोन्ह मैं मिलि गई, नैंक न होति लखाइ।
सौंधे कैं डोरैं लगी अली चली सँग जाइ।।[8]

प्रस्तुत पद्य में कवि ने नायिका के रूप सौन्दर्य को बडी मार्मिकता के साथ अवतरित किया है। उनके अनुसार नायिका का रंग गौरवर्ण है तथा चांदनी रात में वह अपनी सखी के साथ सजी–धजी चली जा रही है और वह गौर वर्ण के कारण चांदनी में ही समाहित हो गई है। जिससे वह अपनी सखी को भी दिखाई नही दे रही है। उसकी सखी नायिका के रूप सौन्दर्य की गंध के सहारे ही नायिका के साथ चली जा रही है।

कवि ने नायिका के नेत्रों के वर्णन में मार्मिकता की अनुभूति कराई है। कवि ने लिखा है–

अनूदित पद्य–

यद्यपि ललना अन्याः सन्ति तीक्ष्णायतलोचना लोके।
तस्य ईक्षणमन्यत् सन्तोऽपि वशीकृता येन।।[9]

मूल पद्य–

अनियारे, दीरघ दृगनु किती न सरूनि समान।
वह चितवनि औरे कछू, जिहिं बस होत सुजान।।[10]

इस पद्य में कवि ने नेत्रों अर्थात् आंखों की गहनता का परिचय दिया है। कवि ने जहां नायक की भावगत दशा को प्रमुखता देकर सौन्दर्य का बिम्ब प्रस्तुत किया है। वे स्थल भी अत्यधिक आकर्षक बन पडे है। एक पद्य दृष्टव्य है–

अनूदित पद्य–

प्रियेणैवं निजौष्ठाभ्यां पिबता धूम्रवर्तिकाम्।
सभ्रूभङ्.गं हसित्वैवं किं न पीतं मनो मम।।[11]

मूल पद्य–

अहे, दहेंडी जिनि धरै, जिनि तूँ लेहि उतारि।
नीकैं है छीकैं छुवै, ऐसैं ई रहि, नारि।।[12]

इस पद्य के अन्तगर्त सौन्दर्य वर्णन अभिधात्मक नही है। इस पद्य में कवि कहना चाहता है कि नायक को नायिका की छवि इतनी आकर्षक लगती है कि वह नायिका के सौन्दर्य से अभिभूत होकर नायिका के रूप सौन्र्य का गुणगान करता है। इसी प्रकार से सौन्दर्यानुभूति का एक और उदाहरण इस प्रकार है–

अनूदित पद्य–

भूयो गच्छति तत्रैव लज्जारज्जुविखण्डिता।
अङ्.गसौन्दर्यपाथोधि–भ्रमिनौकेव मे मनः।।[13]

मूल पद्य–

फिरि फिरि चितु उत हीं रहतु, टुटी लाज की नाव।
अंग–अंग –छबि–झौंर मैं भयौ भौंर की नाव।।[14]

इस पद्य में नायक का मन नायिका के सौन्दर्य सागर में इस तरह से डूब गया है कि उसे भाव– विहल दशा की संज्ञा दी जा सकती है। कवि ने नव विवाहिता नारी के सौन्दर्य का वर्णन अपने काव्य में बताया है। पद्य दृष्टव्य है–

अनूदित पद्य–

दीप्यते ह्याननज्योतिर्धौतवस्त्रे धृते नवे।
सर्वं महानसं चास्या स्वच्छदीप्त्या चमत्कृतम्।।[15]

मूल पद्य–

टटकी धोई धोवती, चटकीली मुख–जोति।
ल्सति रसोई कैं बगर, जगरमगर दुति होति।।[16]

इस पद्य में नव विवाहिता स्त्री की सुन्दरता का वर्णन अति सुन्दर ढंग से किया है कवि कहता है कि तुरन्त की धुली साडी और मुख की ज्योति अग्नि की चमक से भी और अधिक चमकीली है। जिससे नवविवाहिता नारी का सौन्दर्य चारों ओर फैल रहा है।

कवि ने नायिका के चुनरी की प्रशंसा इस प्रकार कही–

अनूदित पद्य–

निवार्य हास्यं तु निजोष्ठयोः सा
कृत्वा ह्यधस्तान्नयने प्रियोच्चैः।
हठेन तस्यैव मुखे कारेण
ताम्बूलमुत्थाय ददौ प्रियस्य।।[17]

मूल पद्य–

पचरँग–रँग–बेंदी खरी उठै ऊगि मुख–जोति।
पहिरैं चीर चिनौटिया चटक चौगुनी होति।।[18]

प्रस्तुत पद्य में नायिका की सखी उसके पंचरंग चुनरी की प्रशंसा करती है, वह कहती है कि इन पांच रंगों की शोभा से तुम्हारे शरीर की शोभा अत्यधिक बढ गयी है जो नायक के हृदय आघात पहुँचाती है।

कवि ने नारी के प्रत्येक हाव–भाव का सुन्दर चित्रण किया है। जब नायिका स्नान के लिए जाती है तो नायक उसके रूप के सौन्दर्य का वर्णन इस प्रकार से करता है–

अनूदित पद्य–

जलार्द्रवासः सदृशः प्रियो मे
यावच्च नालिङ्.गति मां निजाङ्.गैः।
तावन्न मे याति स देहतापः
शान्तिं कथञ्चित् खलु यत्नकोटया।।[19]

मूल पद्य–

मुँहु पखारि मुडहरू भिजै, सीस सजल कर छ्वाइ।
मौरू उचै घूँटेन तैं नारि सरोबर न्हाइ।।[20]

नायक कहता है कि जब नायिका मुँह धोकर, साडी को पहनती है जो भाग सिर पर रहता है वह भिगोकर ऐसी लग रही है मानो जल समेत हाथों छुआकर और ऊँचा मस्तक करके, घुटनों के बल स्थिर होकर सरोवर मे नहाती हुई अत्यधिक शोभायमान हो रही है।

कवि नायिका के स्नान के पश्चात् ज बवह पूर्ण श्रृंगार करके तैयार है। इसी प्रसंग का वर्णन इस प्रकार दृष्टव्य है–

अनूदित पद्य–

दर्पणमिव तद्गात्रं विभान्त्याभूषणानि प्रत्यङ्.गम्।
प्रतिबिम्बितानि तत्र द्वित्रिचतुर्गुणानि जायन्ते।।[21]

मूल पद्य–

बेंदी भाल, तँबोल मुँह, सीस सिलसिले बार।
दृग आँजे, राजै खरी एई सहज सिंगार।।[22]

नायिका की सखी नायक से नायिका की सुन्दरता की प्रशंसा करती है वह कहती है कि भाल अर्थात् मस्तक पर बेंदी, मुख में ताम्बूल, सिर पर भीगे हुए बाल और आँजे हुए दृग, इन्ही सहज श्रृंगारों से वह पूर्णरूप से सुशोभित है। इसी प्रसंग का एक और पद्य दृष्टव्य है–

अनूदित पद्य–

घनं निकुज्जं सुखदा च छाया
मन्दः सुगन्धिस्तरलः समीरः।
अद्याधुनाहं रमणीयमालि
स्मरामि चित्ते यमुनातटं तत्।।[23]

मूल पद्य–

अंग अंग प्रतिबिंब परि दरपन सैं सब गात।
दुहरे, तिहरे, चौहरे, भूषन, जाने जात।।[24]

यहां नायिका के शरीर की शोभा की प्रशंसा सखी दर्पण से करती है वह कहती है कि एक दर्पण से दूसरे दर्पण का प्रतिबिम्ब पडने से अनंत बिम्ब प्रतिबिम्ब पडने से उसके भूषण दुहरे अर्थात् असंख्य जाने जाते है।

कवि ने नारी के सौन्दर्य का सूक्ष्मतिसूक्ष्म चिंतन किया है। निम्नांकित पद्य दृष्टव्य है–

अनूदित पद्य–

पादौ रज्जयितुं तस्या दासी तत्र समागता।
रज्जितौ च विनालक्तं दृष्ट्वा स्पृशति सा पुनः।।[25]

मूल पद्य–

पाइ महावर दैंन कौं नाइनि बैठी आइ।
फिरि फिरि, जानि महावरी, एडी मीडति जाइ।।[26]

अनूदित पद्य–

आननप्रभया तस्याः सर्वदा परितो गृहम्।
पूर्णिमा वर्तते तत्र पच्चाड्.गे तिथिनिर्णयः।।[27]

मूल पद्य–

पत्रा हीं तिथि पाइयै वा घर कैं चहुँ पास।
नितप्रति पून्यौईं रहै आनन–ओप–उजास।।[28]

अनूदित पद्य–

मनोज्ञस्तिलको भाले रत्नैर्विद्योतितैः सखे।
चन्द्रमण्डलमध्यस्थे मार्तण्ड इव राजते।।[29]

मूल पद्य–

नीकौ लसतु लिलार पर टीकौ जरितु जराइ।
छबिहिं बढावतु रबि मनौ ससि–मंडल मैं आइ।।[30]

अनूदित पद्य–

नासिकायां मणिर्नीलस्तस्या विद्योतते बहु।
मन्ये चम्पकपुष्पस्थो भृङ्.गो पिबति तद्रसम्।।[31]
जटित नीलमति जगमगति सींक सुहाई नाँक।
मनौ अली चंपक–कली बसि रसु लेतु निसाँक।।[32]

निष्कर्ष– कवि ने नारी के सौन्दर्य का सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवेचन किया है। सौन्दर्यसप्तशती में नारी के सौन्दर्य को बताने के लिए नायिका शब्द का प्रयोग किया गया है इसमें नारी के प्रत्येक सौन्दर्य को दर्शाया गया है। जब नारी का मुख घूँघट से ढंका रहता है तो उसका सौन्दर्य और अधिक रहता है इस प्रकार से नव विवाहिता के सौन्दर्य को दर्शाया है, इसी क्रम में नायिका के सौन्दर्य को देखकर नायक रीझता है इसका वर्णन भी कवि ने किया हैं। जो चमत्कारपूर्ण है नारी के सौन्दर्य में जितने भी तत्त्व सम्मिलित हो सकते है उन सभी का समावेश करते हुए डॉ. द्विवेदी जी ने नारी के समस्त सौन्दर्य को स्थापित किया है। द्विवेदी जी का नारी सौन्दर्य इतना पूर्ण व प्रभावशाली होता है कि वह पाठक व सहृदय को गहराई तक प्रभावित करता है और आनंद प्राप्त कराता है। सौन्दर्य आनन्द का एक ऐसा शाश्वत स्रोत है जो अजस्र, निर्बाध गति से स्रवित होता रहता है।

संदर्भ–सूची

1 पटेल, मकतलाल– 1995, सौन्दर्य बोध का मनोविज्ञान, पृ.सं. 35

2 मिश्र, रामजी– 1991, रीति काव्य के स्रोत, पृ.सं. 206

3 सौन्दर्यसप्शती, पं. प्रेमनारायण द्विवेदी, पं. प्रेमनाराणद्विवेदीरचनावलिः द्वितीय भागः, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानम्, नवदेहली, संस्करण 2012, श्लोक सं.–691

4 बिहारी सतसई, जगन्नाथदास रत्नाकर, जयभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2006, श्लोक सं.–691

5 सौ.स. श्लोक सं.–538

6 बि.स. श्लोक सं.–538

7 सौ.स. श्लोक सं.–7

8 बि.स. श्लोक सं.–7

9 सौ.स. श्लोक सं.–588

10 बि.स. श्लोक सं.–588

11 सौ.स. श्लोक सं.–699

12बि.स. श्लोक सं.–699

13 सौ.स.श्लोक सं.–10

14 बि.स. श्लोक सं.–10

15 सौ.स. श्लोक सं.477

16 बि.स. श्लोक सं.–477

17 सौ.स. श्लोक सं.–626

18 बि.स. श्लोक सं.–626

19 सौ.स.श्लोक सं.– 666

20 बि.स. श्लोक सं.–666

21 सौ.स. श्लोक सं.–679

22 बि.स. श्लोक सं.–679

23 सौ.स. श्लोक सं.–680

24 बि.स. श्लोक सं.–680

25 सौ. स. श्लोक सं.–35

26 बि.स. श्लोक सं.–35

27 सौ.स. श्लोक सं.–73

28 बि.स. श्लोक सं.–73

29 सौ.स. श्लोक सं.105

30 बि.स. श्लोक सं.–105

31 सौ.स. श्लोक सं.–143

32 बि.स. श्लोक सं.–143